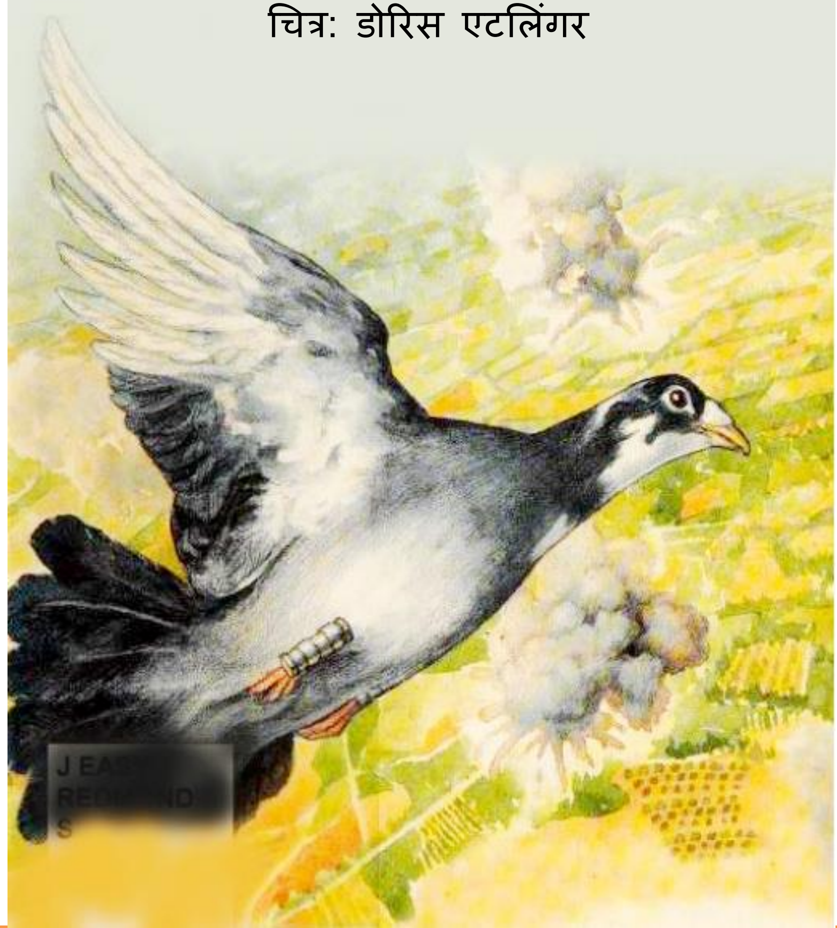
सच्ची कहानी

हीरो सैनिक कबूतर!

शर्ली रेडमंड

चित्र: डोरिस एटलिंगर



सच्ची कहानी

हीरो सैनिक कबूतर!

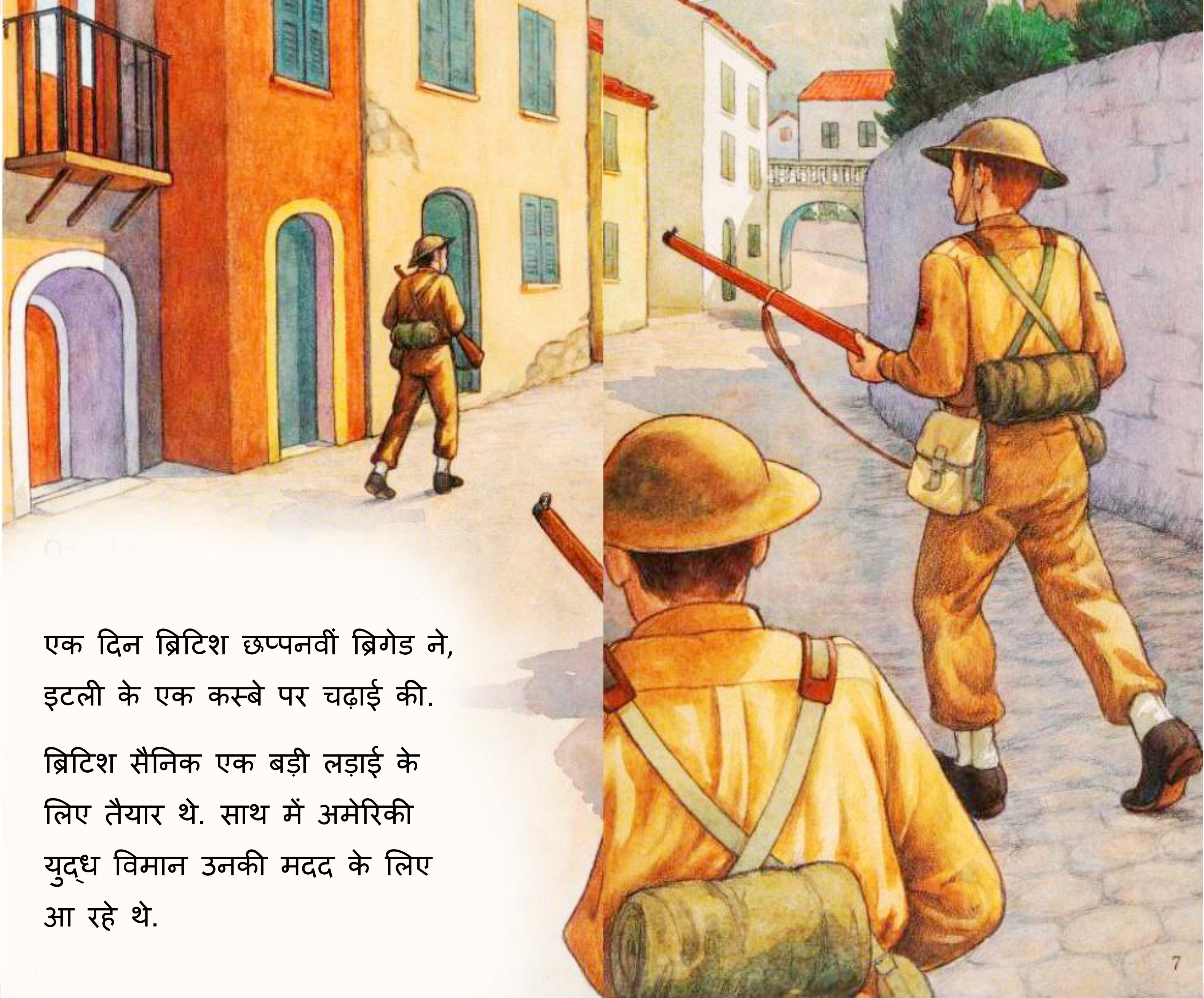


शर्ली रेडमंड

चित्र: डोरिस एटलिंगर

यह एक कबूतर की एक सच्ची कहानी है. उसका नाम जीआई जो था. वो दूसरे महायुद्ध में एक डाकिया कबूतर था.





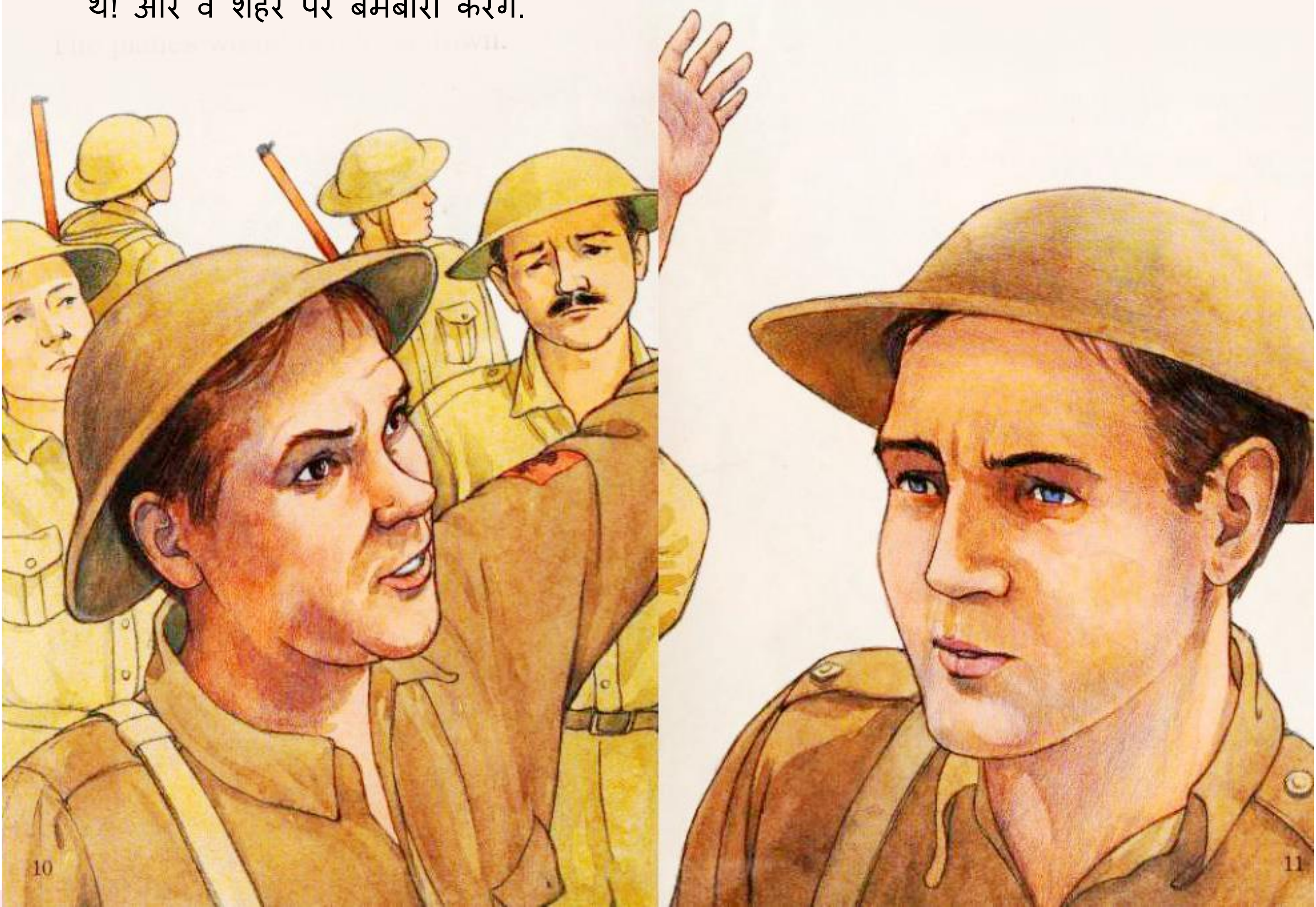
एक दिन ब्रिटिश छप्पनवीं ब्रिगेड ने, इटली के एक कस्बे पर चढ़ाई की.

ब्रिटिश सैनिक एक बड़ी लड़ाई के लिए तैयार थे. साथ में अमेरिकी युद्ध विमान उनकी मदद के लिए आ रहे थे.



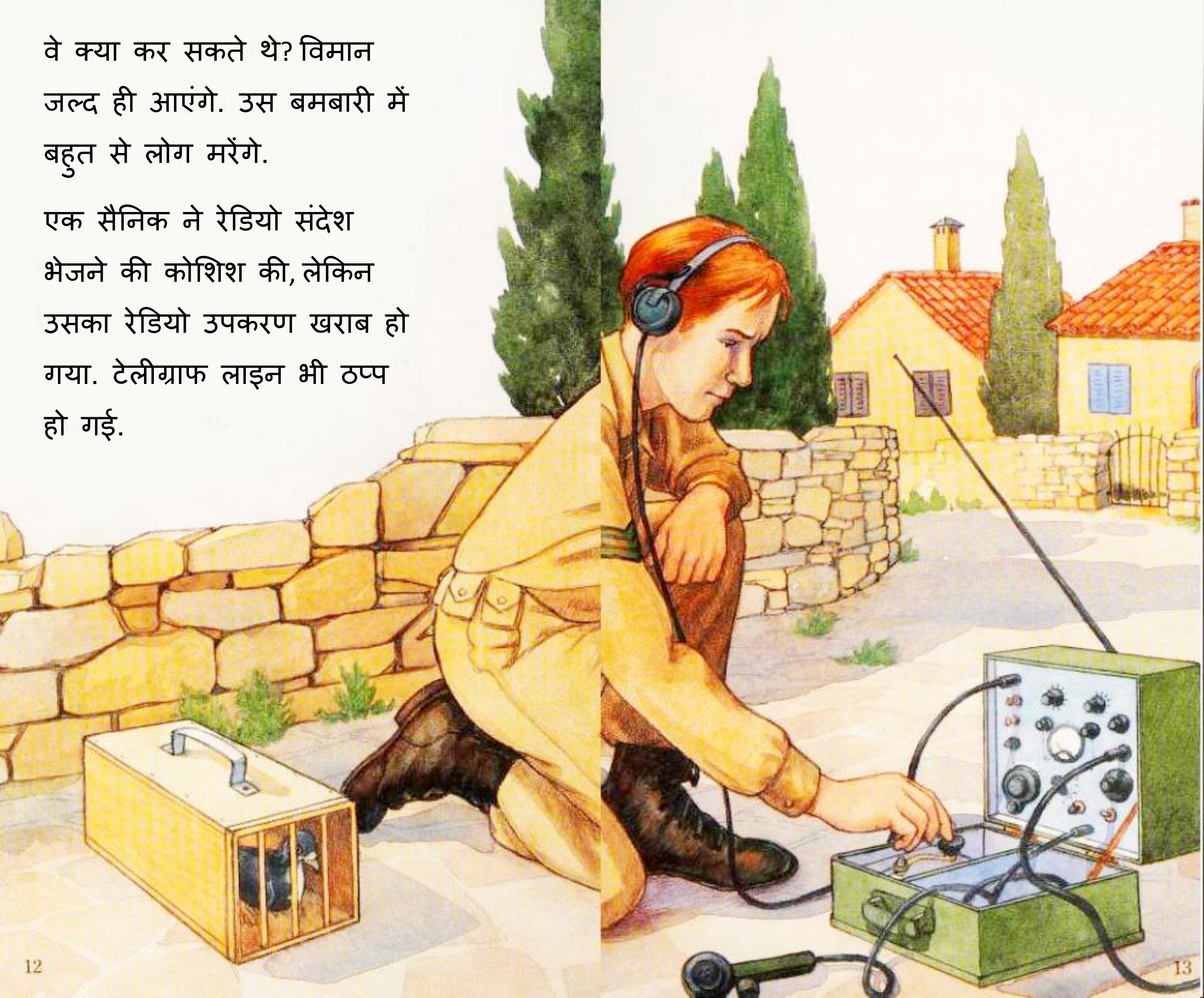
लेकिन जर्मन भाग गए. उस शहर के लोग लड़ना नहीं चाहते थे. सैनिकों ने शांतिपूर्वक शहर पर कब्जा कर लिया.

तभी सिपाहियों को अचानक याद आया
कि अमरीकी युद्ध विमान आने वाले
थे! और वे शहर पर बमबारी करेंगे.



वे क्या कर सकते थे? विमान जल्द ही आएंगे. उस बमबारी में बहुत से लोग मरेंगे.

एक सैनिक ने रेडियो संदेश भेजने की कोशिश की, लेकिन उसका रेडियो उपकरण खराब हो गया. टेलीग्राफ लाइन भी ठप्प हो गई.





तब सिपाही ने जीआई जो की ओर देखा. उसने जल्दी से एक संदेश लिखा और उसे एक छोटी ट्यूब में डाल दिया. फिर सैनिक ने जीआई जो को उसके पिंजरे से बाहर निकाला. उसने उस ट्यूब को कबूतर के पैर में बांध दिया. "उड़ो, जो!" सिपाही चिल्लाया. "जितनी जल्दी हो सके उड़ो!"

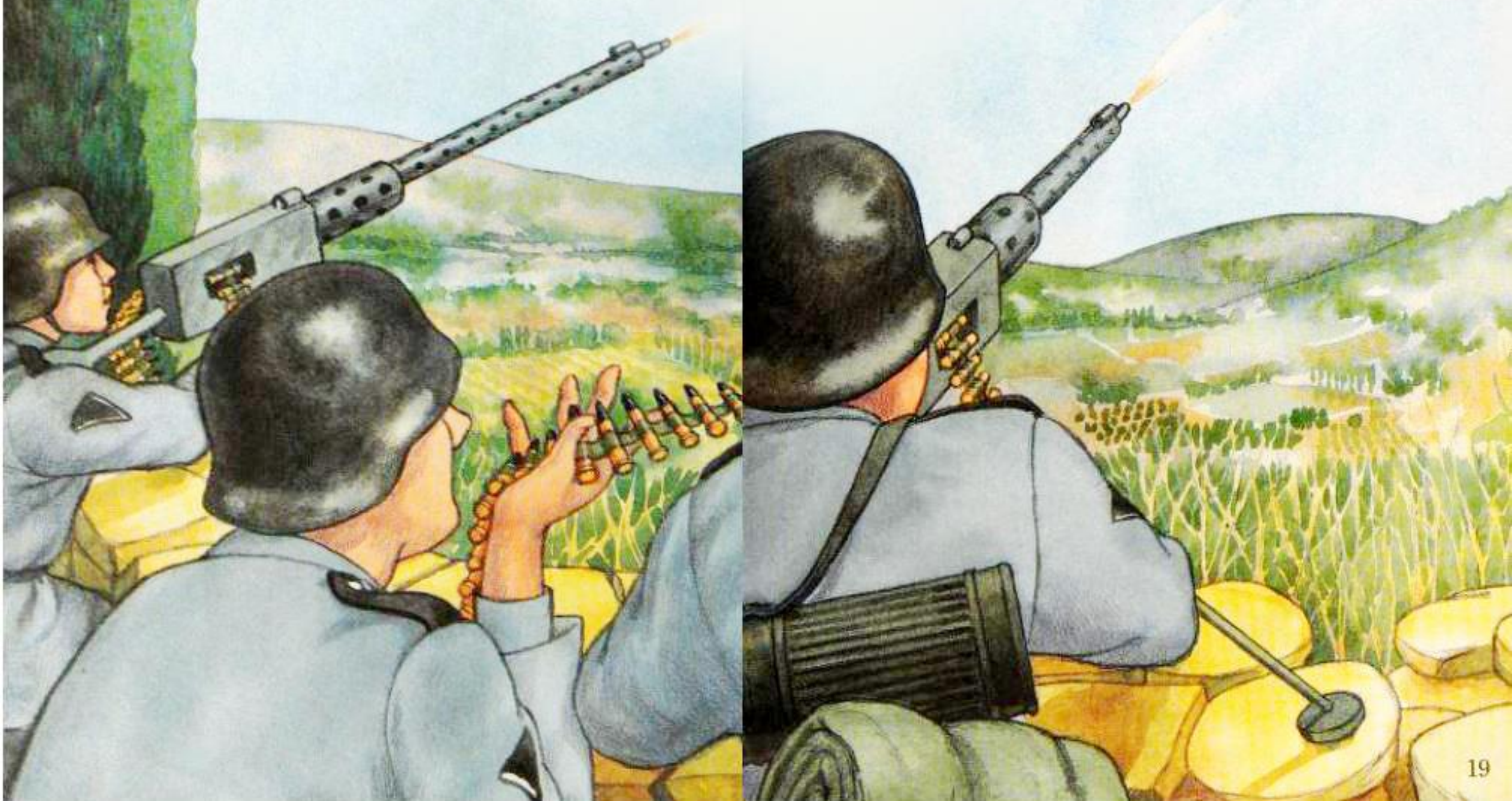
जीआई जो जानता था
कि उसे क्या करना है.
वो एक सैनिक कबूतर
था. वो बहुत बहादुर था.



उसने आसमान में ऊंची
उड़ान भरी. जीआई जो ने
तेजी से उड़ान भरी. उसके
पंख तेज़ी से फड़फड़ाए.

जीआई जो ने मशीन गनों से निकलने वाले गोलों की आवाज सुनी. नीचे से दुश्मन उस पर गोली चला रहे थे!

वे नहीं चाहते थे कि जीआई जो उस महत्वपूर्ण संदेश को लेकर जाए. लेकिन जीआई जो निडर था. उसने ऊंची उड़ान भरी. उसके पंख तेज़ी से फड़फड़ाए.



तभी जीआई जो ने एक बाज को देखा. बाज जो उसे खाना चाहता था! लेकिन जीआई जो होशियार था. फिर वो नीचे, नीचे, और नीचे उड़ा.





वह बाईं ओर उड़ा,

और फिर वो दाईं ओर उड़ा.

फ्लैप, फ्लैप, फ्लैप.

बाज उसे नहीं पकड़ पाया.

आसमान में अंधेरा छा गया.

बरसात होने लगी.

जीआई जो डरता नहीं था.

वो खराब मौसम में भी

उड़ सकता था.

फ्लैप, फ्लैप, फ्लैप.

वो रास्ते में खोया नहीं.



शहर में सैनिकों ने आकाश को देखा.

उन्हें चिंता हो रही थी.

बाकी लोग भी परेशान थे.



क्या होगा अगर जीआई जो उस सन्देश को समय पर नहीं पहुंचा पाया? क्या होगा अगर युद्ध के विमान चल दिए हों?



अंत में जीआई जो अमेरिकी हवाई अड्डे पर पहुंचा. लड़ाकू पायलट रनवे पर मौजूद थे. एक एयरमैन ने कबूतर को उठाया. उसने जल्दी से नोट पढ़ा. फिर उसने कंट्रोल टावर को इशारा किया. उनके बमबारी करने को अभियान को तुरंत बंद कर दिया गया - एकदम समय पर!







जीआई जो के कारण वो शहर बच गया! एयरमैन ने कबूतर को वापस ब्रिटिश सैनिकों के पास भेज दिया. इस बार जीआई जो को एक नया सन्देश देना था. विमान नहीं आएंगे! शहर सुरक्षित रहेगा. सिपाहियों ने जय-जयकार की. लोगों ने भी तालियां बजाईं. जीआई जो एक हीरो था!

जब युद्ध समाप्त हो गया, तो जीआई जो लंदन चला गया. लंदन के लॉर्ड मेयर ने जीआई जो को एक मेडल दिया. उसके बाद जीआई जो डेट्रायट के एक चिड़ियाघर में रहने चला गया. चिड़ियाघर में बहुत से लोग उस प्रसिद्ध युद्ध के दिग्गज कबूतर को देखने के लिए आते थे!





लेखक का नोट

जीआई जो कई बहादुर युद्ध कबूतरों में से एक था. उन कबूतरों ने पनडुब्बियों और युद्धपोतों तक संदेश पहुँचाने के लिए तूफानी समुद्रों में उड़ानें भरीं. उन्हें रात में उड़ान भरने के लिए प्रशिक्षित किया गया था. अक्सर वो दुश्मन की टुकड़ी के ऊपर उड़ान भरते थे. पक्षियों के पैरों से बंधे छोटे कैमरे गुप्त तस्वीरें खींचते थे. इन सैनिक कबूतरों ने किए कई कमाल किए!